है प्रभो! यह तेरापंथ

विज्ञप्ति

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) वर्ष 30 : अंक 5 : दिल्ली : 19 - 25 अप्रेल 2024

युगप्रधान महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण महाराष्ट्र में

स्थानकवासी साध्वी प्रीतिसुधाजी द्वारा भावपूर्ण स्वागत

५ अप्रेल। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने वाघोली से कोरेगांव भीमा की ओर प्रस्थान किया। बी.जी.एस. ब्वायज हॉस्टल शैक्षणिक संस्थान के विद्यार्थियों आदि ने कतारबद्ध खड़े होकर पूज्यप्रवर को सविनय वंदन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। ऊर्ध्वारोहण करता हुआ सम्मुखीन सूर्य क्रमशः तीव्रता धारण करता हुआ-सा प्रतीत हो रहा था, किन्तु पूज्यप्रवर समत्व के साथ गंतव्य की ओर गतिमान थे। आसपास अवस्थित इंडस्ट्रीज तथा राजमार्ग पर गतिमान अत्यधिक वाहनों के कारण वातावरण में प्रदूषण छाया हुआ-सा दृष्टिगोचर हो रहा था।

मार्गस्थ लोणीकंद में मार्ग के दांयीं ओर स्थित क्षेत्रपाल प्रतिष्ठान में स्थानकवासी परंपरा की साध्वी प्रीतिसुधाजी आदि साध्वियां प्रवासित हैं। वे कई दिनों से पूज्यप्रवर से वहां पधारने की प्रार्थना करवा रही थीं। पूज्यप्रवर उनके निवेदन को स्वीकार कर उस ओर मुड़े। उनकी सहवर्ती साध्वियों ने पूज्यप्रवर की अगवानी की। पूज्यप्रवर क्षेत्रपाल प्रतिष्ठान में पधारकर आसीन हुए। वहां स्थानकवासी परंपरा की वयोवृद्ध साध्वी प्रीतिसुधाजी आदि साध्वियों ने पूज्यप्रवर का सादर स्वागत किया। उन्होंने पूज्यप्रवर के स्वागत में स्वरचित गीत का संगान किया, जो इस प्रकार है-

पधारो स्वागत हो स्वीकार।।
आज फले सौभाग्य हमारे,
महाश्रमणजी यहां पधारे,
जिन शासन के दिव्य सितारे,
मधुर-मधुर व्यवहार।। पधारो.....

हम सब मिलकर करते स्वागत,
आओ पधारो नव अभ्यागत,
भावसुमन ले सब हैं प्रस्तुत,
प्रीतिमय व्यवहार।। पधारो.....

तुलसीजी की याद हैं लाए,
महाप्रज्ञजी स्मरण में आए,
तेरापंथ की खुशबू लाए,
वंदन शत-शत बार।। पधारो.....

साध्वी प्रीतिसुधाजी ने पूज्यप्रवर से निवेदन किया- 'हम कब से आपकी प्रतीक्षा कर रहे थे। आज आप हमारे निवेदन को स्वीकार कर यहां पधारे, हम पर बहुत कृपा की। हमारा सौभाग्य है कि आप जैसे महापुरुष के दर्शन का सुअवसर मिला। हम तो चाहते थे कि आपका पूरा प्रवास यहीं हो, किन्तु आपका प्रवास अन्यत्र तय हो गया। आप कुछ समय के लिए भी यहां पधारे हैं, यह भी हमारे लिए भाग्य की बात है। दिल्ली में सन् १९७३ (१९७४) में आचार्यश्री तुलसीजी के दर्शन हुए थे।' साध्वी प्रीतिसुधाजी ने भाईजी महाराज मुनिश्री चंपालालजी की भी स्मृति की तथा उन्होंने गुरुदेव तुलसी के महाप्रयाण के पश्चात उनकी स्मृति में स्वयं द्वारा रचित गीत भी पूज्यप्रवर के सम्मुख प्रस्तुत किया।

आचार्यप्रवर ने साध्वी प्रीतिसुधाजी से पुछवाया- 'चक्की चले काल की....' गीत याद है।' आचार्यप्रवर के मुखारविंद से स्वयं द्वारा रचित गीत की पंक्ति सुनकर साध्वी प्रीतिसुधाजी प्रफुल्लित हो उठीं। उन्होंने अपनी सहवर्ती साध्वियों के साथ उस गीत का संगान किया। पूज्यप्रवर ने अपने पावन उद्बोधन में कहा- 'भगवान महावीर के निर्वाण की २५वीं शताब्दी के प्रसंग में परम पूज्य गुरुदेव तुलसी दिल्ली में विराजमान थे। उस वर्ष हम सरदारशहर में थे। साध्वी प्रीतिसुधाजी उस समय एक प्रसिद्ध नाम था। इनके गीत की रिकार्डिंग भी संभवतः सुनाई गई थी- 'चक्की चले काल की...।' आज साध्वी प्रीतिसुधाजी से मिलना हुआ है।' (पूज्यप्रवर की स्मरणशक्ति को साक्षात देखकर उपस्थित जन चकित थे।) पूज्यप्रवर ने अपने उद्बोधन में साधुत्व के प्रति निष्ठावान रहने की प्रेरणा प्रदान की। साध्वी प्रीतिसुधाजी की सहवर्ती साध्वीजी ने पूज्यप्रवर से निवेदन किया कि हम आचार्य तुलसी द्वारा रचित 'प्रभो तुम्हारे पावन पथ पर' गीत कई बार गाते हैं। आचार्यप्रवर ने उस गीत का आंशिक संगान किया। इस प्रकार मधुर वातावरण में वार्तालाप, उद्बोधन आदि का क्रम रहा।

पूज्यप्रवर साध्वी प्रीतिसुधाजी के निवेदन पर करीब बानवे वर्षीय साध्वी सुशीलकंवरजी को दर्शन देने उनके प्रवास कक्ष में पधारे। उन्होंने पूज्यप्रवर से मंगलपाठ सुना। बताया गया कि साध्वी सुशीलकंवरजी साध्वी प्रीतिसुधाजी की संसारपक्षीय बहन हैं। उनके संसारपक्षीय परिवार से करीब सोलह व्यक्ति स्थानकवासी आम्नाय में दीक्षित हैं। साध्वी प्रीतिसुधाजी ने पूज्यचरणों में अपने कृतज्ञभाव अर्पित किए।

पूज्यप्रवर करीब ११.५ कि.मी. का विहार कर कोरेगांव भीमा में स्थित न्यू लाईफ आयुर्वेद हॉस्पिटल अल अमीन एज्युकेशनल एण्ड मेडिकल फाउण्डेशन में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में हिंसा और मृषा से बचने की प्रेरणा प्रदान की।

६ अप्रेल। परम पावन आचार्यप्रवर प्रातः कोरेगांव भीमा से शिकरापुर के लिए प्रस्थित हुए। पूज्यप्रवर कुछ कम दूरी वाले कच्चे मार्ग से आगे पधारे। यह पथ पथरीला होने के कारण कुछ ऊबड़-खाबड़ अवश्य था, किन्तु आसपास स्थित खेतों के कारण कुछ सुरम्यता भी लिए हुए था। सम्मुखीन सूर्य का आतप क्रमशः बढ़ती हुई गर्मी को अनुभूत करा रहा था। लगभग १२ कि.मी. का विहार सम्पन्न कर पूज्यप्रवर शिकरापुर में स्थित सी.एस. भुजबल ग्लोबल स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। विद्यालय के प्रिंसिपल श्री जॉयमन आदि ने पूज्यप्रवर का सविनय स्वागत किया।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत अपने पावन प्रवचन में सामान्य धर्म के सूत्रों की चर्चा करते हुए उन्हें आत्मसात करने की प्रेरणा प्रदान की। आचार्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा- 'आज इस विद्या संस्थान में आना हुआ है। यहां पढ़ने वाले विद्यार्थियों में संस्कारों का खूब अच्छा विकास होता रहे।'

बादलों व सूर्य के संघर्ष के बीच गतिमान अध्यात्म जगत के महासूर्य

७ अप्रेल। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने प्रातः शिकरापुर से रांजणगांव के लिए प्रस्थान किया। मार्ग में राजपुरोहित परिवार के सदस्यों ने अपने घर व होटल के समीप पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगलपाठ का श्रवण किया। विहार के दौरान आसमान में विहरण कर रहे बादलों की टुकड़ियों ने मानों तेजस्वी सूर्य को आच्छादित करने का प्रयास किया। इस प्रयास में कभी बादल सफल बने तो कभी सूर्य उन पर हावी रहा। बादलों की सफलता अनुकूल वातावरण निर्मित कर रही थी तो सूर्य का प्रभुत्व चतुर्थ परीषह की अनुभूति करा रहा था, किन्तु पूज्यप्रवर अनुकूल और प्रतिकूल दोनों स्थितियों से अप्रभावित रहे। आसपास के खेतों में खड़े ईख इस क्षेत्र में गन्नों की प्रचुर पैदावार को दर्शा रहे थे। ज्वार, मकई आदि भी यत्र-तत्र दृष्टिगोचर बन रहे थे। छोटे-छोटे वृक्षों पर लगी केरियां आम के सीजन की निकटता की द्योतक थीं। लगभग १५ कि.मी. का प्रलम्ब विहार कर पूज्यप्रवर रांजणगांव में स्थित राजकीय विद्यालय में पधारे। पूज्यप्रवर का एकदिवसीय प्रवास यहीं हुआ।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने मंगल प्रवचन में समय प्रबन्धन की प्रेरणा प्रदान की। पूज्यप्रवर के निर्देशानुसार 'प्रेक्षा लाइफ स्किल से जुड़ी हुई' साध्वी समताप्रभाजी और साध्वी ऋद्धिप्रभाजी ने समय प्रबन्धन के संदर्भ में अपनी अभिव्यक्ति दी।

पूज्यप्रवर ने चतुर्दशी के प्रसंग में हाजरी का क्रम संपादित करते हुए उपस्थित चारित्रात्माओं को विविध प्रेरणाएं प्रदान कीं। साध्वी आर्षप्रभाजी और साध्वी चेतनप्रभाजी ने लेखपत्र का उच्चारण किया। तदुपरान्त साधु-साध्वियों ने अपने-अपने स्थान पर खड़े होकर लेखपत्र उच्चरित किया।

विद्यालय के प्राचार्य श्री प्रकाश कटारिया ने कहा- 'आज रांजणगांव में पधारे परम पूजनीय आचार्यश्री महाश्रमणजी का मैं यहां की समस्त जनता की ओर से तथा अपने संघ की ओर से हार्दिक स्वागत करता हूं। आपके आगमन से हमें बहुत ही खुशी हो रही है। हमारे संघ का सौभाग्य है कि आज हमें आपके दर्शन व सेवा का अवसर प्राप्त हुआ है।' श्री दर्शन चोरड़िया ने भी अपनी अभिव्यक्ति दी।

विहार के मध्य साधनालीन हुए नियमनिष्ठ गुरुवर

८ अप्रेल। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर प्रातः रांजणगांव के प्रवास स्थल से प्रस्थित हुए और स्थानीय लोगों की प्रार्थना पर पूज्यप्रवर नवनिर्मित जैन सांस्कृतिक भवन में पधारे। साध्वीवर्याजी आदि साध्वीवृंद का गत कल का प्रवास यहीं हुआ था। संबंधित लोगों ने आचार्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। पूज्यप्रवर ने वहां आसीन होकर उपस्थित जनता को उत्प्रेरित किया। गत कल के प्रवास स्थल विद्यालय में आज परीक्षा आयोजित होनी है, इसे ध्यान में रखते हुए आचार्यप्रवर ने वहां से कुछ जल्दी प्रस्थान किया था, इस कारण पूज्यप्रवर का जप आदि साधना का वह उपक्रम कुछ अवशिष्ट रह गया, जिसके बिना पूज्यप्रवर जल भी ग्रहण नहीं करते। पूज्यप्रवर ने मार्ग में एक स्थान पर आसीन होकर जप आदि का अनुष्ठान संपन्न किया, तदुपरान्त पानी ग्रहण किया। आचार्यप्रवर की नियमनिष्ठा दर्शकों को उत्प्रेरित कर रही थी।

पूज्यप्रवर करीब ११.५ कि.मी. का विहार कर सदरवाड़ी में स्थित अभिनव विद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। विद्यालय के मुख्याध्यापक श्री अरुण गोरडे आदि शिक्षक, विद्यार्थी आदि विद्यालय के मुख्य द्वार पर पूज्यप्रवर के स्वागत हेतु कतारबद्ध और करबद्ध खड़े थे। उन्होंने सविनय वंदन कर श्रीचरणों में अपने भावसुमन अर्पित किए।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा- 'हमें मानव जीवन प्राप्त है। चौरासी लाख जीव योनियां बताई गई हैं, उनमें मानव जीवन अपने आप में विशिष्ट होता है। मानव जीवन को प्राप्त कर जो व्यक्ति धर्म के पथ पर नहीं चलता और पाप कार्य करता है, वह व्यक्ति मानों परिश्रम से प्राप्त चिंतामणि रत्न को प्रमाद के कारण समुद्र में गिरा देता है। भ्रमण करते-करते कितने समय बाद यह मानव जीवन प्राप्त होता है। प्राप्त जीवन को पापों, भोगों में गंवाना, धर्म नहीं करना एक प्रकार की अशुभ बात होती है।

मानव जीवन प्राप्त कर कोई साधु बन जाए, यह तो बहुत अच्छी बात है, किन्तु हर कोई साधु बन जाए, यह कठिन है। गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी अच्छे संस्कारों से युक्त जीवन जीना प्रयास का विषय होता है। पूज्यप्रवर ने शिक्षा के साथ सत्संस्कारों के विकास का आयास करने की प्रेरणा प्रदान की।'

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा- 'आज यहां आना हुआ है। यहां पढ़ने वाले विद्यार्थियों में नैतिक, आध्यात्मिक उन्नयन का कार्य होता रहे। मंगलकामना।'

अभिनव विद्यालय के मुख्याध्यापक श्री अरुण गोरडे ने कहा- 'आज सदरवाड़ी के इस विद्यालय में युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी का मंगल पदार्पण हुआ है। मैं उनका हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन करता हूं। कहा गया है कि साधु-संत जिस दिन घर पधारते हैं, उस दिन दीपावली और दशहरा एक साथ होते हैं। आपके आगमन से हमारी भूमि धन्य हो गई है। आपका आशीर्वाद हम सभी को प्राप्त होता रहे।'

श्री खामकर सर ने कहा- 'मैं विद्यालय संस्था और सदरवाड़ी की जनता की ओर से महान संत आचार्यश्री महाश्रमणजी का हार्दिक स्वागत करता हूं। आप जैसे पुण्यात्मा ने अब तक लगभग पचपन हजार किलोमीटर से ज्यादा पदयात्रा कर ली है। आपके पावन चरण के स्पर्श से हमारा विद्यालय भी धन्य-धन्य हो गया है। यह हमारा सौभाग्य है कि आपके दर्शन व सेवा का अवसर हम सभी को प्राप्त हुआ है। आपमें हमें साक्षात् भगवान के दर्शन होते हैं। आपसे विनती है कि हमारे विद्यालय और इस गांव को ऐसा आशीर्वाद प्रदान करें कि हम सभी का आध्यात्मिक विकास हो, हमारे गांव में सद्भावना व शांति रहे, हमारे विद्यालय के बच्चों का भी खूब विकास हो।'

मुम्बई प्रवास व्यवस्था समिति की ओर से पूज्यप्रवर के मुम्बई प्रवास व यात्रा के संक्षिप्त विवरण से युक्त पुस्तक 'युगप्रधान की यशस्वी यात्रा : मुम्बई प्रवास २०२३-२४' पूज्यप्रवर के समक्ष लोकार्पित की गई। इस संदर्भ में आचार्यप्रवर ने कहा- 'बृहत्तर मुम्बई में हमारा सन् २०२३ का चतुर्मास, सन् २०२४ का मर्यादा महोत्सव तथा कुछ शेषकाल का प्रवास हुआ। गुरुदेव तुलसी ने करीब सात दशक पूर्व मुम्बई में चतुर्मास व मर्यादा महोत्सव किया था, उस समय तो मैं जन्मा ही नहीं था। गुरुदेव महाप्रज्ञजी ने बृहत्तर मुम्बई में मर्यादा महोत्सव व लम्बा प्रवास किया था। यह छोटा-सा संकलन सामने आया है। इतिहास की सुरक्षा का प्रयास है।'

इस अवसर पर मुम्बई प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री मदनलाल तातेड़ तथा श्रीमती करुणा कोठारी ने अपनी अभिव्यक्ति दी।

विक्रम संवत् २०८१ का शुभारम्भ व शिरूर में भव्य स्वागत

६ अप्रेल। चैत्र शुक्ला प्रतिपदा। विक्रम संवत् २०८१ का शुभारम्भ। महाराष्ट्र में इस दिन को गुडी-पाडवा के रूप में मनाया जाता है। यों तो आज का विहार ज्यादा लम्बा नहीं था, किन्तु शिरूरवासियों की प्रार्थना पर पूज्यप्रवर की स्वीकृति ने इसमें करीब १.७ कि.मी. की बढ़ोतरी कर दी। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने सूर्योदय के कुछ समय पश्चात सदरवाड़ी से शिरूर की ओर प्रस्थान किया। शिरूर शहर के बाहरी भाग में स्थानकवासी श्रमण संघ के मंत्री श्री कमलमुनि 'कमलेश' आदि ने पूज्यप्रवर की सादर अगवानी की। वो बोले- 'मैंने आपके दर्शन और आपका स्वागत करने के लिए अपने सारे कार्यक्रम कैंसिल कर दिए।'

स्थानीय विधायक श्री अशोक बाबू पंवार, पूर्व सांसद एवं वर्तमान लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी श्री शिवाजीराव माडकराव पाटिल आदि के नेतृत्व में शिरूर की जनता ने पूज्यप्रवर का सश्रद्धा स्वागत किया। स्थानीय अन्य जैन समाज की जनता के उत्साह और उपस्थिति को देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा था कि शिरूर में अच्छी संख्या में तेरापंथी परिवार निवासित हैं। पूज्यप्रवर भव्य स्वागत जुलूस के साथ स्थानीय स्थानक में पधारे और उसके भीतर से ही समीपस्थ पंचायत भवन में पधारे। वहां पूज्यप्रवर के पावन सान्निध्य और स्थानकवासी संत कमल मुनिजी 'कमलेश' की उपस्थिति में एक कार्यक्रम समायोजित हुआ, जिसमें स्थानीय जनता की ओर से पूज्यप्रवर के स्वागत में अभिव्यक्ति दी गई, तदुपरान्त स्थानीय विधायक श्री अशोक बाबू पंवार तथा पूर्व सांसद श्री शिवाजीराव माडकराव पाटिल ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए।

स्थानकवासी श्रमण संघ के मंत्री कमलमुनिजी 'कमलेश' ने अपने वक्तव्य में सन् १९९५ और सन् २०११ में हुए मिलन की स्मृति करते हुए कहा कि आचार्यश्री महाश्रमणजी जैसी पवित्रता, समता, सौम्यता, सहजता जीवन में आ जाए तो आत्मा का उद्धार हो जाए।'

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्बोधन में वि.सं. के नववर्ष के प्रसंग में उपस्थित जनता को समय का सदुपयोग कर जीवन में धर्म संचय करने की प्रेरणा प्रदान की। जन समुदाय की प्रार्थना पर पूज्यप्रवर ने नववर्ष के संदर्भ में मंगलपाठ समुच्चारित किया। कार्यक्रम के उपरान्त कमलमुनिजी 'कमलेश' पूज्यप्रवर को पहुंचाने करीब सवा कि.मी. दूर स्थित प्रवास स्थल तक साथ चले। पूज्यप्रवर ने उन्हें कहा कि यहीं से विदाई ले लें तो वे बोले- 'मुझे आज यह दुर्लभ अवसर प्राप्त हुआ है। गर्मी है तो क्या हुआ, आप जैसे महापुरुष के साथ चलने से मेरे भी महानिर्जरा होगी।'

पूज्यप्रवर करीब ५.७ कि.मी. का विहार सम्पन्न कर शिरूर के चांदमल ताराचंद बोरा कॉलेज ऑफ आर्टस, कॉमर्स एण्ड साइंस परिसर में स्थित (ब्वायज हॉस्टल) में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। स्थानीय ट्रस्टी श्री धर्मधर फूलफगर ने पूज्यप्रवर का श्रद्धायुक्त स्वागत किया।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत अपने पावन प्रवचन में कहा- 'जीवन में अध्ययन का बहुत महत्त्व है। अध्ययन करने से ज्ञान प्राप्त होता है। यह अध्ययन का मानों पहला लाभ है। ज्ञान की प्राप्ति एक अच्छी उपलब्धि है। ज्ञान बहुत पवित्र तत्त्व है। धार्मिक संदर्भों में ज्ञान प्राप्त होना, आत्मकल्याण की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण होता है।

अध्ययन का दूसरा लाभ है- एकाग्रचित्त होना। अध्ययन अच्छा है तो आदमी में एकाग्रता भी आनी चाहिए। अध्ययन का तीसरा लाभ है- सन्मार्ग पर स्थित हो जाना। चौथा लाभ है- स्वयं सन्मार्ग पर स्थित होकर दूसरों को सन्मार्ग पर स्थित करना। इस प्रकार अध्ययन के चार लाभ हो सकते हैं, होने चाहिए।

पूज्यप्रवर ने नववर्ष के संदर्भ में कहा- 'आज विक्रम संवत् का नया वर्ष शुरु हुआ है। वि.सं. २०८० की विदाई हो गई। विक्रम संवत् की इक्कीसवीं शताब्दी का नवां दशक अर्थात् इक्यासीवां वर्ष शुरु हुआ है। हमारे धार्मिक कार्यक्रमों में वि.सं. काफी उपयोग में आता है। चतुर्मास, संवत्सरी, अक्षय तृतीया आदि धार्मिक आराधना के उपक्रमों व कार्यक्रमों में वि.सं. काफी काम आता है। (पूज्यप्रवर ने नववर्ष के संदर्भ में मंगलपाठ का उच्चारण किया। आचार्यप्रवर ने एक वर्ष के लिए एक संकल्प स्वीकार करने की प्रेरणा प्रदान की एवं धारणानुसार त्याग कराया।)

समय अपनी गति से चलता है। उसे रोका नहीं जा सकता। काल को रोकने का सोचने की अपेक्षा उसका अच्छा उपयोग करना चाहिए। आदमी समय को प्रमाद में न गंवाए। शुभ योगों में उसका अच्छा उपयोग करे, अथवा अयोग में रहे। समय आने से पहले उसके सदुपयोग के विषय में जागरूक हो जाना चाहिए।

इस वि.सं. २०८१ में हमारा चतुर्मास यथासंभवतया सूरत में होना निर्धारित है और अक्षय तृतीया औरंगाबाद के लिए यथासंभवतया निर्धारित है। जालना में वैशाख शुक्ला नवमी, दसमी और चतुर्दशी के कार्यक्रम समायोज्य हैं। चैत्र शुक्ला नवमी परम पूज्य आचार्य भिक्षु का अभिनिष्क्रमण दिवस है और चैत्र शुक्ला त्रयोदशी भगवान महावीर की जन्म जयंती है। चतुर्मास में पर्युषण, संवत्सरी, भगवान महावीर का निर्वाण दिवस आदि भी आते हैं। इस वि.सं. का मर्यादा महोत्सव भुज में होना यथासंभवतया निर्धारित है।

आदमी यह ध्यान दे कि उसकी धार्मिक साधना अच्छी चले, वह आत्मोत्थान के लिए प्रस्थान करे। वर्ष शुभ योगों में बीतता है, धार्मिक साधना में बीतता है तो मानों वर्ष हमारे लिए शुभ हो गया। वि.सं. २०८१ हमारे लिए आध्यात्मिक दृष्टि से शुभ रहे, हम उसके लिए यथासंभव प्रयत्नशील रहें।'

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा- 'आज शिरूर आना हुआ है। पहले गांव में गए थे। अब इस संस्थान में कार्यक्रम हो रहा है। धारीवाल परिवार भी खूब आध्यात्मिक-धार्मिक दिशा में आगे बढ़ता रहे, सभी लोगों में आध्यात्मिक-धार्मिक जागरणा रहे।'

आचार्यप्रवर के स्वागत में कॉलेज के ट्रस्टी श्री शिरीष भाई बरमेचा ने कहा- 'परम पूज्य गुरुदेव भगवान को कोटि-कोटि वंदना। हम सभी का परम सौभाग्य है कि आज भगवान गुरुदेव महाश्रमणजी का यहां पदस्पर्श हुआ है। आपके चरणस्पर्श को पाकर हमारा कॉलेज बहुत पावन हो गया है। मैं आठ दिन से इसके लिए प्रयासरत था। शिकरापुर में परीक्षा की वजह से आपके प्रवास के लिए स्कूल उपलब्ध नहीं करा पाया था, इसका मुझे बहुत दुःख है, किन्तु आज आपकी कृपा को प्राप्त कर जीवन धन्य हो गया।'

नारायण गांह्वाण में तेरापंथ के नारायण

१० अप्रेल। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातः शिरूर से नारायण गांह्वाण के लिए प्रस्थान किया। पुणे और अहमदनगर जिले की विभाजन रेखा बनी हुई पोड नदी पर बने पुल से पूज्यप्रवर ने अहमदनगर जिले में प्रवेश किया। लोगों ने बताया कि शिरूर का दूसरा नाम कोड नदी भी है। जैन समाज के कुछ लोगों को अपने-अपने घर, दुकान आदि के निकट पूज्यप्रवर के दर्शन व श्रीमुख से मंगलपाठ सुनने का सौभाग्य मिला। शिरूर से करीब चालीस किलोमीटर दूर स्थित पिपला गांव से चोरड़िया परिवार के कुछ व्यक्ति आचार्यप्रवर के दर्शनार्थ आए। वे बोले- 'हम यों तो स्थानकवासी समाज के हैं, किन्तु हमें तेरापंथ अच्छा लगता है, इसलिए आज आपके दर्शन करने के लिए आए हैं। उन लोगों ने पूज्यप्रवर की मार्गसेवा का लाभ भी प्राप्त किया।

इस क्षेत्र में गन्ना, ज्वार, लहसून आदि की खेती प्रचुरता लिए हुए दिखाई दी। नारायण गांह्वाण के एक जैन परिवार ने अपने व्यावसायिक प्रतिष्ठान के समीप पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद ग्रहण किया। लगभग ११ कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर नारायण गांह्वाण में स्थित ब्लु मिंग बर्ड्स इंग्लिश मीडियम स्कूल एण्ड जूनियर कॉलेज में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत अपने पावन प्रवचन में कहा- 'धार्मिक साहित्य में मोक्ष की बात आती है। सर्व दुःख मुक्ति और हमेशा के लिए एकांत सुख की प्राप्ति मोक्ष की स्थिति में होती है। साधुपन और श्रावकत्व ग्रहण किया जाता है, इसके मूल में भी मोक्ष प्राप्ति का लक्ष्य होता है।

जो चण्ड होता है, गुस्सेल प्रवृत्ति वाला होता है, वह जब तक चण्डत्व में रहता है, तब तक वह मोक्ष को प्राप्त नहीं कर सकता। गुस्सा दुष्परिणामदायक हो सकता है। आदमी को गुस्से पर नियंत्रण करने का प्रयास

करना चाहिए। क्षमता होने पर भी मौके पर शांति व क्षमा रखना, गुस्सा नहीं करना बड़ी बात होती है। क्षमा वीर व्यक्ति का आभूषण होता है।

जिसमें अपनी बुद्धि व ऋद्धि का अहंकार होता है, उसे मोक्ष प्राप्त नहीं होता। पिशुन अर्थात् चुगलखोर, बिना विचारे कार्य करने वाले तथा अनुशासित न रहने वाले, विनय में अकोविद, अदृष्टधर्मा और असंविभागी व्यक्ति को मोक्ष प्राप्त नहीं हो सकता। आदमी चण्डत्व आदि से मुक्त रहकर मोक्ष की दिशा में आगे बढ़े, यह काम्य है।'

गुरुदेव विद्यालय में परम पूज्य गुरुदेव

११ अप्रेल। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर के गत रात्रिक प्रवास स्थल विद्यालय से प्रस्थान से पहले संस्थान के ऑनर श्री धनंजय नाईक आचार्यप्रवर के दर्शनार्थ आए। उन्होंने श्रीचरणों में अपने कृतज्ञ और मंगलभाव अर्पित किए। पूज्यप्रवर नारायण गांह्वाण से वाघुण्डे के लिए प्रस्थित हुए। आसपास स्थित पर्वतों के बीच बना हुआ आज का विहार पथ आरोह-अवरोह लिए हुए था।

मार्ग में स्थानकवासी आम्नाय के आचार्यश्री आनंदऋषिजी की परंपरा की साध्वी सुशीलकंवरजी की शिष्या साध्वी सुप्रभाजी आदि ठाणा-३ ने पूज्यप्रवर का अभिवादन किया। पूज्यप्रवर का उनसे संक्षिप्त वार्तालाप हुआ। वे बोलीं- 'आप हमें शिक्षा फरमाएं।' आचार्यप्रवर ने साधना व आगम स्वाध्याय की प्रेरणा प्रदान की तथा यथासंभव जनता के कल्याण के लिए भी आयास करने हेतु भी उत्प्रेरित किया। साध्वीजी बोलीं- 'आज हम आपके दर्शन कर धन्य हो गईं। हमें बहुत अच्छा लगा।' उन्होंने बताया कि उनकी मुखिया साध्वी सन्मतिजी आदि साध्वियां अभी वाघोली से करीब आठ कि.मी. दूर स्थित हैं।

दंगा नदी पर बना पुल पूज्यचरणों से पावनता को प्राप्त हुआ। लोगों ने बताया कि पानी की किल्लत के मद्देनजर नदी के जल को रोकने के लिए एनिकट बनाए जा रहे हैं। मार्ग में अहमदनगर, राओरी आदि के जैन समाज के कुछ लोगों ने अपनी-अपनी फैक्ट्री आदि के निकट पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगलपाठ का श्रवण किया। आचार्यप्रवर करीब १२.३ कि.मी. का विहार कर वाघुण्डे में स्थित गुरुदेव सेमी इंग्लिश स्कूल एण्ड जूनियर कॉलेज में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में कहा- 'अपनी आत्मा को निर्मल बनाने की साधना करना मनुष्य जीवन में सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य हो सकता है। अविवाहित अवस्था में दीक्षित होकर लम्बेकाल तक संयम का पालन करना बहुत बड़ी बात होती है। कई गृहस्थ भी बहुत अच्छे साधक हो सकते हैं। तप व संयम में रत, ऋजुता के गुण से युक्त तथा अमोहदर्शी साधु अपने कर्मों का क्षय करते हैं। आदमी अपने जीवन में तप, संयम, आर्जव गुण आदि का विकास करे, यह उसके लिए श्रेयस्कर हो सकता है।'

स्कूल के प्रिंसिपल श्री संतोष मगर ने कहा- 'आज हमारे लिए बहुत ही प्रसन्नता का दिन है। हमारे स्कूल का नाम गुरुदेव है और आज यहां महान गुरुदेव आचार्यश्री महाश्रमणजी पधारे हैं। आपके दर्शन प्राप्त कर और आपकी बातों को सुनकर हमें बहुत सुन्दर प्रेरणाएं प्राप्त हुई हैं। आपकी मंगलवाणी से मुझे संस्कार, समय प्रबन्धन और सेवा की बड़ी सुन्दर जानकारी प्राप्त हुई। मैं अपने स्कूल परिवार की ओर से आपका बहुत-बहुत स्वागत एवं अभिनंदन करता हूं।'

स्थानीय सरपंच श्री राजेश शैलके ने कहा- 'मैं राष्ट्रसंत आचार्यश्री महाश्रमणजी का सर्व समाज की ओर से हार्दिक स्वागत करता हूं। आपके पदस्पर्श से यह भूमि पावन हो गई है। आपने यहां पधार कर हम सभी को सेवा का सुअवसर प्रदान किया, यह हमारे जीवन की अमूल्य निधि है।'

१२ अप्रेल। गत रात्रिक प्रवास स्थल विद्यालय में आज परीक्षा समायोजित होनी है, इसे ध्यान में रखते हुए परमाराध्य आचार्यप्रवर ने विद्यालय परिसर से कुछ जल्दी ही कामरगांव की ओर प्रस्थान कर दिया। पूज्यप्रवर ने मार्ग में आसीन होकर जप आदि साधनानुष्ठान सम्पन्न किया। तदुपरान्त ही पानी ग्रहण किया। नियमनिष्ठ आचार्यप्रवर की साधना के प्रति सजगता उपस्थित संतों व लोगों में प्रेरणा भर रही थी।

पूज्यप्रवर सुपा गांव के लोगों की प्रार्थना पर करीब तीन सौ मीटर अतिरिक्त दूरी तय करना स्वीकार कर गांव के भीतर स्थित स्थानक में पधारे। वहां पहले से स्थित स्थानकवासी चौथमल दिवाकर संप्रदाय की साध्वी

मधुबालाजी आदि ने पूज्यप्रवर का अभिवादन किया। स्थानीय जैन समाज के लोगों ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। आचार्यप्रवर ने उपस्थित लोगों को धर्माचरण की प्रेरणा प्रदान की।

आसपास स्थित पहाड़ियों पर लगीं पवन चक्कियां हवा के वेग से चलायमान बनी हुई थीं। मार्ग के परिपार्श्वस्थ खेतों में वर्धमान बनी हुई फसलें इस क्षेत्र की मिट्टी के उपजाऊपन और कृषकों के मेहनत को दर्शा रही थीं। स्थान-स्थान पर लगे प्याज के ढेर इस क्षेत्र में प्याज की खेती की प्रचुरता के द्योतक थे। काकरे गांव के ग्रामीणों ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। पूज्यप्रवर लगभग १०.१ कि.मी. का विहार सम्पन्न कर कामरगांव में स्थित राजकीय विद्यालय में पधारे। आज का प्रवास राजकीय विद्यालय में रखा गया था, किन्तु निकट ही श्री संतोषजी ठोकड़ परिवार का निर्मीयमाण मकान पूज्यप्रवर के प्रवास की दृष्टि से उपयुक्त लगा तो आचार्यप्रवर का आज का प्रवास यहीं रखा गया।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने राजकीय विद्यालय परिसर में आयोजित मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में कहा- 'मन के द्वारा आदमी चिंतन करता है, स्मृति करता है और कल्पना करता है। मन में अनेक प्रकार के विचार आते रहते हैं। जैन धर्म में छह लेश्याएं बताई गई हैं। वे आदमी की भावधारा की मानों द्योतक हैं कि कैसी-कैसी भावधारा बन सकती है। आदमी यह प्रयास करे कि उसकी भावधारा शुभ रहे, यदि अशुभ भावधारा चल रही है तो उसे शुभ भावधारा में परिवर्तित करने का प्रयत्न करना चाहिए।'

जिला परिषद स्कूल के अध्यक्ष श्री हेमंत साठे ने कहा- 'आज हमारे कमारगांव में पूज्य गुरुदेव महाश्रमणजी का शुभागमन हुआ है। आपकी सेवा का अवसर प्राप्त होना हम सभी के लिए परम सौभाग्य की बात है। महाराजजी की कृपा हम सभी पर बनी रहे।'

स्कूल के प्रधानाचार्यश्री आजिंक्य जेण्डे ने कहा- 'आज हमारे कामरगांव में एक महान संत का मंगल आगमन हुआ है। हमारे गांव में मां कामाख्या का प्रसिद्ध मंदिर है, जिसके कारण हमारे इस गांव में किसी तरह से मांस-मछली का प्रयोग नहीं होता है। ऐसे पुण्यशाली गांव के गौरव को बढ़ाने के लिए पूज्य गुरुजी का मंगल आगमन हुआ है। मैं ग्रामवासियों व स्कूल की ओर से आपका हार्दिक स्वागत करता हूं। आपका आशीर्वाद हमारे गांव पर सदा बना रहे और हमें बार-बार आपकी सेवा का अवसर मिलता रहे।'

श्री मौली महाराज ने कहा- 'मैंने अनेक जैनी साधु-सतों की सेवा की है, किन्तु आज मुझे आचार्यश्री महाश्रमणजी की सेवा में उपस्थित होकर आपके दर्शन कर धन्यता की अनुभूति हो रही है। सभी प्रकार की सेवाओं में सबसे बड़ी सेवा साधु की सेवा को बताया गया है। आज वह सेवा हमें आपकी कृपा से प्राप्त हो रही है, यह हमारे पुण्य का उदय है। आपके आशीर्वाद से हम सभी का कल्याण हो।'

अहमदनगर के मुहाने पर

१३ अप्रेल। परम पावन आचार्यप्रवर प्रातः कामरगांव से केडगांव के लिए प्रस्थित हुए। अहमदनगर जैन समाज के लोग इन दिनों आचार्यप्रवर के दर्शनार्थ बड़ी संख्या में उपस्थित हो रहे हैं। आज भी विहार मार्ग में कई लोगों ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद ग्रहण किया।

विहार मार्ग के समीपस्थ आनंदवन चास में प्रवासित स्थानकवासी साध्वियों में से दो साध्वियां आचार्यप्रवर की प्रतीक्षा में खड़ी थीं, पूज्यप्रवर वहां पधारे तो उन्होंने इस आश्य का निवेदन किया कि आप आनंदवन के भीतर पधारें। वहां वयोवृद्ध डॉ. साध्वी प्रियदर्शनाजी आपकी प्रतीक्षा कर रही हैं। पूज्यप्रवर ने उस स्थान के भीतर पधारने के लिए अपने चरण बढ़ाए, किन्तु मार्गस्थ बीज इसमें बाधक बन गए। पूज्यप्रवर भीतर नहीं पधार पाए तो स्थानकवासी श्रमण संघ की उपप्रवर्तिनी डॉ. साध्वी प्रियदर्शनाजी को उनकी सहवर्ती साध्वियां व्हीलचेयर के माध्यम से पूज्यप्रवर के सम्मुख लेकर उपस्थित हुईं। आचार्यश्री आनंदऋषिजी की परंपरा में साध्वी प्रमोदसुधाजी की शिष्या डॉ. साध्वी प्रियदर्शना जी आदि तीनों साध्वियों ने पूज्यप्रवर का अभिवादन किया। साध्वी प्रियदर्शनाजी बोलीं- 'आज हमारे अलौकिक, आध्यात्मिक सूर्योदय हुआ है। साध्वीश्री प्रमोदसुधाजी ने आचार्य तुलसी के दर्शन किए थे। आज हमें आपके दर्शन का सौभाग्य मिला है। हम बहुत आनंदित हैं।' पूज्यप्रवर ने उन्हें मंगल प्रेरणा भी प्रदान की।

मार्ग के परिपार्श्वस्थ चीकूवाड़ी के निकट पूज्यप्रवर उदकपान के लिए आसीन हुए तो उससे संबंधित श्री शिवाजी फलके ने सपरिवार पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। उन्होंने चीकूवाड़ी के विषय में बताया कि उनके इस फार्महाउस में १३० चीकू के वृक्ष हैं। उन्होंने इस चीकूवाड़ी को रेस्टोरेंट का रूप दे रखा है, यहां चीकू के वृक्षों की सघन छाया में बैठकर लोग भोजन आदि करते हैं।

पूज्यप्रवर लगभग १२ कि.मी. का विहार सम्पन्न कर अहमदनगर के मुहाने पर स्थित केडगांव में स्थित डॉन बोस्को ग्रामीण विकास केन्द्र में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। संस्थान के डायरेक्टर फादर जॉर्ज आदि ने पूज्यप्रवर का सादर स्वागत किया।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने दुर्लभ मानव जीवन का आध्यात्मिक लाभ उठाने की प्रेरणा प्रदान की। आज नेपाल देश में नया वर्ष शुरु हुआ। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने इस संदर्भ में बृहत् मंगलपाठ का उच्चारण कर एक आध्यात्मिक संकल्प स्वीकार करने की प्रेरणा प्रदान की एवं धारणा अनुसार संकल्प स्वीकार कराया।

कार्यक्रम के दौरान डॉन बोस्को ग्रामीण विकास केन्द्र के डायरेक्टर फादर जार्ज ने पूज्यप्रवर के स्वागत में कहा- 'मैं डॉन बोस्को ग्रामीण विकास केन्द्र और डॉन बोस्को परिवार की ओर से आचार्यश्री महाश्रमणजी का हार्दिक स्वागत करता हूं। हम खुद को भाग्यशाली समझते हैं कि आपके चरण हमारे इस केन्द्र में पड़े। आप जैसे पहली बार हमारे आंगन में पधारे हैं। आपका प्रवचन मुझे बहुत अच्छा लगा। मैं यहां पधारने के लिए आपके प्रति आभार व्यक्त करते हुए एक बार पुनः स्वागत करता हूं।'

पूज्यप्रवर का आज का प्रवास अहमदनगर से सटे हुए स्थान में ही हो रहा था। अहमदनगर जैन समाज के लोग बड़ी संख्या में आचार्यप्रवर के दर्शन व पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए।

स्मारणा

- संघीय संस्थाओं का कार्यकाल दो वर्ष से अधिक न हो।
- संघीय संस्थाओं में एक व्यक्ति निरंतर दो कार्यकाल से अधिक अध्यक्ष पद पर न रहे।

(श्रावक संदेशिका, धारा- ३०-३१)

मुनि सुबोधकुमारजी और मुनि शुभंकरकुमारजी तेरापंथ धर्मसंघ की साधु संस्था से मुक्त

मुनि सुबोधकुमारजी (ताम्बरम्) ७ अप्रेल को किशनगंज (बिहार) में तथा मुनि शुभंकरकुमारजी (सरदारशहर) १८ अप्रेल को कड़ा (महाराष्ट्र) में तेरापंथ धर्मसंघ की साधु संस्था से मुक्त हो गए हैं।

विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार का पता एवं संपर्क सूत्र

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, 3 पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता 700001

मो.नं. - 7044778888 Email : vigyapti@terapanthinfo.com

ऑनलाइन विज्ञप्ति Terapanth मोबाईल एप तथा www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध

Date of Publication : 22-04-2024

(Page 1-8)

19-25 April 2024

विज्ञप्ति

Postal Reg. No. DL(C) -01/1243/2024-26 Wed.-Thu.

L.No.-U(C)-200/2024-26

Licence to Post without Pre-payment

Regd. No. 61758/95 Office of Posting Delhi PSO Delhi-6

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक- संजय खटेड़ द्वारा प्रिंट मास्टर इन्टरप्राइजेज, एल.एल.पी-६३ जी.एफ.पटपड़गंज इंडस्ट्रियल एरिया, दिल्ली से मुद्रित तथा अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली- 110002 से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला